Student Name: Tabassum Nigar

Supervisor Name: Professor Farhat Nasreen

Name of the Department: History and Culture

Name of the Topic: ***Rohilla Dominions across Regions: A Study of the Eighteenth Century***

Key Words: अफ़ग़ान, रूहेला, रूहेलखंड, विस्थापन, हाफिज रहमत खान, अली मुहम्मद खान, नाज्बुद्दौला|

FINDINGS

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के द्वारा 18वीं सदी के इतिहासलेखन से सम्बंधित क्षेत्र में किया गया अध्ययन है। हिंदुस्तान में 18वीं शताब्दी का इतिहास बहुत ही उथल पुथल एवं संक्रमण का युग रहा है। अकसर इस युग को लूटमार, अराजकता, एवं अव्यवस्था का काल कहा जाता है, इस सदी में एक ओर मुग़ल साम्राज्य का पतन तो वहीँ दूसरी और क्षेत्रीय शक्तियों को उभरते भी देखा गया है। 18वीं शताब्दी में जिन क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ, वह उनकी प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्तियों का परिणाम थीं। उसी कालखंड में रोहेला अफगानों कि शक्तियों का भी उदय हुआ, जो अफगानिस्तान के 'रोह' इलाके से व्यापारी के रूप में आये और हिमालय की तराई इलाके कटेहर (रोहेलखंड) में बस गए और धीरे-धीरे अपनी शक्तियां बढा कर वहां के शासक हो गए, तथा सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक, अर्थात सभी आयामों से विकसित किया। रोहेलों ने अपने पडोसी राज्यों से भी सामाजिक राजनैतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाये अतः 18वीं सदी के परिपेक्ष्य में एक क्षेत्रीय शक्ति के प्रभुत्व एवं उसके प्रभुत्व क्षेत्र का आकलन तथा विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है। इसी सम्बन्ध में यह अध्ययन रोहेलखंड क्षेत्र के रोहेला अफगानों की पहचान, उनके द्वारा राज्य निर्माण के साथ ही उनके अधिकार क्षेत्र और वहां की व्यवस्थाओं (सामाजिक, आर्थिक और सैनिक) के सम्बन्ध में है। जहाँ उनकी प्रशासनिक नीतियों एवं संस्कृतियों में अफगानी और हिन्दुस्तानी दोनों का समन्वित रूप देखने को मिलता है। रूहेलखंड राज्य मुग़ल साम्राज्य के अन्य उत्तराधिकारी राज्यों अवध, बंगाल, हैदराबाद तथा पंजाब की भांति नहीं बल्कि यह प्रतिरोधी स्वायत्त राज्य के रूप मे अपनी पहचान बनायीं। अतः इस शोध के अंतर्गत संक्रमण काल में एक स्वायत्त राज्य

की स्थापना उसके निरंतर निर्माण एवं उसके विकास के क्रम को दर्शाया गया है। जिसके अंतर्गत मध्यकाल में हिंदुस्तान की ओर अफगानियों का विभिन्न चरणों में स्थानांतरण को समझने का प्रयास किया गया है। अट्ठारहवीं सदी में अफगान प्रवास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से ये अफगान व्यापारी के रूप में आये और यहाँ की राजनैतिक परिस्थिति का लाभ उठाते हुए स्वयं को शासक वर्ग की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। अट्ठारहवीं सदी में रोहेला अफगानों की उत्पत्ति एवं हिंदुस्तान में हुए अफगान स्थानांतरण और उनके बसाव तथा हिंदुस्तान में उनकी उत्तरोत्तर विकसित शक्ति के विश्लेषण के अंतर्गत रुहेलखंड राज्य निर्माण की निंतर विकास की प्रक्रिया दाउद खान, अली मुहम्मद खान तथा हाफिज रहमत खान के समय में राज्य निर्माण की आवश्यकताओं तथा राज्य निर्माण के दौरान रोहेलों की अपनी पहचान बनने की प्रक्रिया को दर्शाता है। बाहरी तौर पर तो रुहेलों की प्रशसनिक व्यवस्था मुगलों के प्रशासनिक व्यवस्था पर ही केन्द्रित थी। परन्तु आतंरिक व्यवस्थाओं में हमें अफगानी प्रशासन ही दिखाई देता है। रुहेलों ने बड़े-बड़े परगनों को जिलों में विभक्त कर दिया, जिससे प्रशासन को सुचारू रूप से चलाया जा सके। आर्थिक और सैन्य स्थिति मज़बूत होने के कारण रूहेलखंड एक स्वायत्त क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ। 18वीं शताब्दी में विदेशों से होने वाले व्यापार में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, अतः रुहेलों ने व्यापारियों को आकर्षित करने के लिए अनेक सड़कों, सरायों, नए नगरों एवं बाज़ारों की स्थापना की, जिससे उनकी सम्पन्नता में और अधिक वृद्धि हुई। रूहेला अफगानों के अंतर्गत रूहेला राज्य एक समृद्ध क्षेत्रीय राज्य के रूप में विकसित हुआ। जबकि अब तक के अधिकांश अध्ययन इसे एक लूट राज्य के रूप में साबित किया जाता रहा है। । रूहेला सरदारों की सरपरस्ती में बनवाए आँवला, बरेली, पीलीभीत का, मुरादाबाद, बिसौली, रामपुर इत्यादि सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरे। नजीबुद्दौला ने नजीबाबाद शहर तामीर किया। हर जगह सुन्दर भवन, मस्जिदें, मदरसे, आँवला, पीलीभीत, शाहजहांपुर इत्यादि शहर धार्मिक अध्ययन एवं अध्यापन के केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने के साथ ही इन रूहेला अफगानों ने शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में भी अनेक कार्य किये।